सीखने की प्रक्रिया में क्रियाकलाप केन्द्र की भूमिका

❑ अश्वनी कुमार गर्ग

सीखने की सबसे अच्छी प्रक्रिया है, करके सीखना । हालांकि इधर 'गतिविधि आधारित' शिक्षण और 'आनंददायी शिक्षण' जैसे जुमले बहुत चल रहे हैं जो सीखने के तकनीकी उपक्रम में घटित होकर रह जाते हैं । क्रियाकलाप पर आधारित शिक्षण का एक दार्शनिक परिप्रेक्ष्य है जिसमें ज्ञान की निर्मिति अवधारणाओं पर आधारित होती है ।

शिक्षा मूलत: सीखने सिखाने की प्रक्रिया है तथा व्यक्ति और समाज के गुणात्मक विकास के लिए शिक्षा एक आवश्यक शर्त है । शिक्षा सुनने, बोलने, अनुकरण करने, पढ़ने, लिखने, गणना करने से शुरू होकर उत्तरोत्तर अनेक क्षेत्रों में बढ़ती जाती है तथा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक पक्ष को विकसित करती है ।

प्रत्येक बच्चों में कुछ क्षमतायें जन्मजात होती हैं । शिक्षा द्वारा इन क्षमताओं का सही दिशा में विकास किया जाता है तथा विकसित दक्षताओं को समयानुकूल उपयोग में लाया जाता है। प्राथमिक शिक्षा बच्चों के पढ़ने-लिखने, गणना करने के साथ ही साथ शिष्ट व्यवहार, मधुर बोलचाल, सुसंस्कार, भौतिक तथा मानवीय जीवन की समझ पैदा करने वाली होती है । प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में बच्चे के शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक पक्ष को अधिक से अधिक विकसित करने की आवश्यकता होती है । इसके लिए आवश्यक है कि पठन-पाठन की प्रक्रिया रोचक और उत्तेजना प्रदान करने वाली हो। शिक्षकों द्वारा संचालित पठन-पाठन प्रक्रिया भी तभी गुणात्मक होगी जब वे स्वयं प्रेरित होकर उसके साथ जुड़ें। शिक्षा में रूचि और प्रेरणा मूलत: सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है । इसके लिए आवश्यक है कि सीखने की प्रक्रिया को पारस्परिक बनाया जाये । लेकिन व्यावहारिक रूप में यह परम्परागत शिक्षण प्रक्रिया होकर रह-गई है ।

प्राथमिक स्तर पर पढ़ने तथा सीखने की प्रक्रिया को बालकेन्द्रित तथा क्रियाकलापों पर आधारित बनाने की संकल्पना की गई है । यह प्रक्रिया बच्चों में स्वयं सीखने की प्रवृत्ति, आत्मविश्वास, विवेकपूर्ण दृष्टिकोण, जिज्ञासा, खोज करने की भावना, सृजनात्मकता, प्रश्न पूछने का साहस, सत्य तथा सौंदर्य परक मूल्यों की सराहना जैसे गुणों के विकास के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करती है ।

यह नैसर्गिक तथ्य है :

- बच्चे खेलना पसंद करते हैं । वे खेल के नियम स्वयं बनाते हैं, उनमें परिवर्तन करते रहते हैं । नये खेल बनाते हैं और आनंद प्राप्त करते हैं ।
- बच्चे तब अच्छे ढंग से सीखते हैं जब क्रीडायें अनौपचारिक वातावरण में होती है और सामग्री तथा तरीके अपने होते हैं ।
- बच्चे सिर्फ शिक्षक से ही नहीं सीखते अपितु दूसरे बच्चों के साथ अन्त:क्रियायें करके भी सीखते हैं ।
- सुनने की अपेक्षा देखने से अधिक सीखना होता है तथा पूरी तरह से सीखना स्वयं कार्य करने से होता है । अवधारणाऐं तभी स्पष्ट होती हैं जब स्वयं करके देखते हैं ।
- बच्चे जब स्वयं कार्य करते हैं तो उन्हें विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त होते हैं । जब उन्हें अपने कार्य में सफलता मिलती है तो उन्हें आनन्द की प्राप्ति होती है और आगे कार्य करने के लिए उनका हौसला बुलंद होता है, उनमें आत्म विश्वास जागृत होता है तथा सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है ।
- बच्चा किसी बात को आसानी से सीख लेता है, यदि सीखना कुछ करने से संबंधित हो ।
- स्वयं कार्य करने पर कौतूहल उत्पन्न होता है और अधिक चिन्तन तथा कार्य करने की प्रेरणा मिलती है ।
- बच्चे जब एक स्वच्छ वातावरण में समुदाय के लोगों के संपर्क में आते हैं तो लोगों के अनुभव सुनने का अवसर मिलता है। बच्चों के ज्ञान में वृद्धि होती है, बातचीत करने पर अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ती है ।

उपरोक्त सभी तब संभव हैं जब विद्यालय परिसर में एक समुदाय आधारित गतिविधि केन्द्र हो जिसे हम 'क्रियाकलाप केन्द्र' कह सकते हैं ।

क्रियाकलाप केन्द्र के उद्देश्य

□ बच्चों के शारीरिक विकास के लिए तथा सहयोग की भावना विकसित करने के लिये शाला परिसर में या शाला के पास एक ऐसा स्थान उपलब्ध कराना जिसमें बच्चे खेल सकें तथा आनन्द ले सकें ।

□ बच्चों के बौद्धिक विकास के लिये वे सब संसाधन उपलब्ध कराना जिनसे बच्चों में खोजी प्रवृत्ति विकसित हो । बच्चों में प्रेक्षण, व्यवस्थीकरण, विश्लेषण, व्याख्या करना, समस्या का समाधान ढूढ़ना, स्वतंत्र-चिंतन, तर्क-संगत निष्कर्ष निकालने के कौशलों का विकास हो।

□ बच्चों के सामाजिक विकास के लिए समुदाय के लोगों से संपर्क कराने का स्थल प्रदान करना, जहां बच्चे समुदाय के लोगों से मिलकर उनसे ज्ञान अर्जित कर सकें, उनके अनुभव जान सकें, अपने क्षेत्र की कला, संस्कृति जान सकें, खेती किसानी, उद्योग, व्यवसाय आदि के बारे में जान सकें । अपने परिवेश तथा पर्यावरण संरक्षण के बारे में जान सकें ।

□ जीवन मूल्यों तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करना । विशिष्ट व्यक्तियों को आमंत्रित कर बच्चों से संपर्क करवाना । ऐसे आदर्श प्रस्तुत करना जिससे बच्चे प्रेरणा ले सकें ।

□ बच्चों में गायन, वादन, नृत्य, नाटक आदि कौशलों को विकसित करने के लिए उपयुक्त व्यवस्था करना । इस कार्य में समुदाय के लोगों का सहयोग बहुत ही महत्वपूर्ण हो सकता है ।

□ बच्चों में हाथ से कार्य करने के प्रति ललक जागृत करने के लिए मिट्टी के कार्य, कागज के कार्य, कढ़ाई, सिलाई, रस्सी बॅटना, टोकरी बुनना, खेती बाड़ी के कार्य आदि के लिए सुविधा प्रदान करना । इससे बच्चों में श्रम के प्रति आदर पैदा होगा।

□ बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने, पर्यावरण के संरक्षण, संवर्द्धन के लिए प्रेरित करने तथा प्रकृति के पांच तत्वों - हवा, पानी, मिट्टी, आकाश तथा अग्नि के प्रति जागरूक बनाने पर, उनका सुविधाजनक रूप से उपयोग करने के प्रति सचेत करना ।

क्रियाकलाप केन्द्र कैसे स्थापित हों ?

क्रियाकलाप केन्द्र को निम्नानुसार चरणबद्ध तरीके से स्थापित किया जा सकता है :

- शिक्षक पहले शिक्षा समिति के सदस्यों, ग्राम पंचायत, समुदाय और पालकों के साथ सम्पर्क करके क्रियाकलाप केन्द्र के विभिन्न पक्षों पर बातचीत करें ।
- ग्राम पंचायत तथा शिक्षा समिति के सदस्यों के साथ क्रियाकलाप केन्द्र के लिए कम से कम एक हजार वर्ग फीट स्थान निर्धारित करायें ।
- ये स्थान शाला के पास होना चाहिए जिससे इसे विभिन्न कार्यों के लिए उपयोग में लाया जा सके । चयनित स्थान तक बच्चों, पालकों और समुदाय की पहुंच आसान होनी चाहिए तथा स्थान पर पीने का पानी, टॉयलेट आदि की समुचित व्यवस्था हो अथवा बाद में की जा सके ।
- शिक्षा समिति समुदाय के साथ बैठक करके केन्द्र पर की जाने वाली गतिविधियों की योजना बनाएं ।
- निर्धारित प्रक्रियाओं के अनुसार श्रमदान तथा समुदाय के आर्थिक सहयोग से क्रियाकलाप केन्द्र को स्थापित करें ।
- यदि किसी अनुदान की आवश्यकता हो तो शासन स्तर से उसकी मांग करें ।
- क्रियाकलाप केन्द्र की संकल्पना समुदाय के लोग आपस में तय करें ।
- क्रियाकलाप केन्द्र को स्थापित करके बच्चों की सहभागिता लेनी जरूरी है, जिससे उनका आत्मीय संबंध स्थापित हो सके ।
- क्रियाकलाप केन्द्र को सांस्कृतिक केन्द्र में विभिन्न क्रीड़ाएं आयोजित करें ।

क्रियाकलाप केन्द्र में कैसी प्रक्रियाएं की जाएं ?

केन्द्र में सभी बच्चों को आकर्षित करने के लिए ऐसी गतिविधियों का चयन किया जाये जो क्षेत्र में सर्वाधिक प्रचलित हैं तथा सभी के लिए आनन्दायी हों ।

- जिनकी पहुंच सर्वाधिक हो ।
- लोक सांस्कृतिक परम्पराओं पर आधारित हो ।
- शिक्षा प्राप्ति के लिए सलाह व्यक्तियों में तीव्र उत्कंठा उत्पन्न करने वाली हो।
- विभिन्न प्रक्रियायें मिश्रित रूप से हो जिसमें बालक और बालिका सुविधा के साथ भाग ले सकें ।
- गतिविधियां बच्चों तथा समुदाय के आम जीवन, लोक सांस्कृतिक पद्धति से जुड़ी हो ।

क्रियाकलाप केन्द्र में अग्रलिखित खेल व क्रीड़ाएं की जा सकती हैं :

1. शारीरिक विकास के लिए

भागना	खींचना	लेकर चलना
कूदना	झूलना	निर्माण करना
उछलना	फिसलना	तैरना
उछालना	संतुलन बनाना	पानी उछालना
फांदना	धकेलना	विभिन्न प्रकार के खेल खेलना
घिसटना	उठाना	पी.टी. या ड्रिल करना

2. भाषा विकास के लिए

बोलने सुनने से संबंधित गतिविधियां,	निबंध प्रतियोगिता करना
	कहानियां कहना
गीत गाना	कठपुतलियों से खेलना
कविताएं कहना व बनाना	खुली बातचीत करना
पहेलियां सुनाना	तस्वीरों पर बातचीत करना
प्रश्न पूछना	अन्ताक्षरी खेलना

3. गणितीय विकास के लिए

दुकान के खेल

गणितीय गीत

गणितीय खेल

गणितीय मौखिक प्रश्न

गणितीय पहेलियां

4. परिवेश से विज्ञान सीखने के लिए -

समस्त ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग करते हुए - जिनमें देखना, सूंघना, सुनाना, चखना, स्पर्श करना सम्मिलित हैं - किसी वस्तु, घटना, तथ्य के विषय में बारीकी से विचार करना तथा चर्चा करना

- अवलोकन करना तथा किसी चीज या घटना को ध्यान से देखना
- देखे हुए तथ्यों की सूची बनाना
- प्रश्न पूछना, उत्तरों की खोज करना
- घटनाओं की जांच करके उत्तरों की खोज करना
- समझना कि घटनाएं क्यों, और कैसे होती हैं ?
- शैक्षिक भ्रमण करना
- छोटे-छोटे प्रयोग करना

5. सामाजिक और नैतिक विकास के लिए -

- नम्रता से बोलना ।
- बोलने से पहले अपनी बारी का इन्तजार करना ।
- निर्देशों का पालन करना ।
- चीजों को एक दूसरे के साथ मिल बांटना ।
- सामूहिक कार्यों में भाग लेना ।
- समुदाय के लोगों से बातचीत करना।
- ठीक समय पर सौंपे गये कार्यों को करना ।
- सामग्री को उपयोग करने के बाद उचित स्थान पर रखना।
- दूसरें के साथ स्नेह और सहृदयता दिखाना ।
- एक दूसरे की सहायता करना ।
- स्वच्छता, सफाई की आदत का प्रदर्शन करना
- स्वच्छ पीने का पानी तथा साफ भोजन की आदत बनाना।
- पर्यावरण को नष्ट होने से बचाने के लिए कार्य करना ।

6. हस्त कौशल के लिए

- पेंटिंग बनाना अथवा रंग भरना
- रेखाचित्र बनाना
- कागज की कलाकृतियां बनाना
- मूर्ति बनाना
- रंगोली बनाना
- गमलों में पौधे लगाना
- क्यारी बनाना तथा उसमें फूलों के पौधे लगाना ।
- खिलौने, गुड़िया, मुखौटे बनाना
- बुनाई करना, कढ़ाई करना
- चटाई बनाना

7. सृजनशीलता के विकास के लिए

छांटना	रंग भरना
क्रमबद्ध करना	नृत्य
नाम पता करना	संगीत
कल्पना करना	वर्गीकरण करना
अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तु बनाना	निष्कर्ष निकालना
	कारण और प्रभाव में
वस्तु के विभिन्न उपयोग	संबंध ढूंढना। ◆